संख्या-737/2017/1269/22-2-2017-17(483)/2017

प्रेषक,

सूर्य प्रकाश सिंह सेंगर,
संयुक्त सचिव
उत्तर प्रदेश शासन।

सेवा में,

महानिरीक्षक,
कारागार प्रशासन एवं सुधार सेवायें,
उत्तर प्रदेश, लखनऊ।

कारागार प्रशासन एवं सुधार अनुभाग-2 **लखनऊ दिनांक 30 अगस्त, 2017**

विषय:- आदर्श कारागार, लखनऊ में निरूद्ध सिद्धदोष बन्दी राजेन्द्र सिंह पुत्र श्री पुत्तू सिंह, निवासी जनपद-हरदोई की फार्म-ए के आधार पर समयपूर्व रिहाई के सम्बन्ध में।

महोदय,

उपर्युक्त विषयक मुख्यालय कारागार के पत्र संख्या-16050-185/प्रोबेशन-3(एम 02.05.2017) दिनांक-18.05.2017 का कृपया संदर्भ ग्रहण करें।

2- उक्त पत्र दिनांक 18.05.2017 द्वारा उपलब्ध कराये गये प्रस्तावानुसार सिद्धदोष बन्दी राजेन्द्र सिंह पुत्र श्री पुत्तू सिंह, ग्राम-रमपुरा प्रतिपालपुर, थाना-हरपालपुर, जनपद-हरदोई का निवासी है। बन्दी ने जगतपाल की 3-4 बिस्वा जमीन पर कब्जा कर लिया और पंचायत का फैसला नहीं मान रहा था। घटना से 4-5 दिन पूर्व भी राजेन्द्र की जगतपाल से कहासुनी हुयी थी। इसी बात को लेकर दिनांक 29.12.2000 को लगभग 04.30 बजे जगतपाल के भाई सुमनपाल सिंह पर डण्डा वा खुरपी से हमला कर हत्या की। उक्त अपराध हेतु बन्दी को सत्र परीक्षण संख्या-310/2001 के अन्तर्गत भा0द0वि0 की धारा-302 के अन्तर्गत मा0 अपर सत्र न्यायाधीश, हरदोई के आदेश दिनांक 11.05.2004 द्वारा आजीवन कारावास के दण्ड से दण्डित किया गया, जिसे मा0 उच्च न्यायालय के आदेश दिनांक 23.11.2006 द्वारा यथावत रखा गया। बन्दी द्वारा दिनांक 25.02.2017 तक 15 वर्ष 08 माह 25 दिन की अपरिहार तथा 19 वर्ष 07 माह 18 दिन की सपरिहार सजा भोगी गयी है। बन्दी का जेल आचरण अच्छा एवं सुधारात्मक है। जिला प्रोबेशन अधिकारी, पुलिस अधीक्षक, जिला मजिस्ट्रेट द्वारा बन्दी की समयपूर्व मुक्ति की संस्तुति नहीं की गयी है। प्रोबेशन बोर्ड द्वारा अपने अभिमत में अंकित किया है कि बन्दी ने जगतपाल से जमीन पर कब्जे को लेकर हुए विवाद में दिनांक 29.12.2000 को जगतपाल के भाई सुमनपाल सिंह पर डण्डा वा खुरपी से हमला कर हत्या करने का जघन्य अपराध कारित किया है। इस प्रकार बन्दी द्वारा जघन्य अपराध कारित किया है। इस तरह के अपराधियों की समयपूर्व रिहाई से समाज में न्यायिक प्रणाली के बारे में विपरीत सन्देश जायेगा। बन्दी का अपराध व्यक्ति विशेष तक सीमित अपराध की श्रेणी में होने, भविष्य में अपराध करने का अवसर होने, अशक्त न होने, जेल में और आगे निरूद्ध रखने का सार्थक प्रयोजन होने, पारिवारिक सामाजिक व आर्थिक दशा समयपूर्व रिहाई हेतु उपयुक्त न होने की पुष्टि पुलिस अधीक्षक, जिला प्रोबेशन अधिकारी एवं जिला मजिस्ट्रेट द्वारा 05 बिन्दुओं की आख्या में की है। इस प्रकार बन्दी द्वारा किये गये अपराध की गंभीरता, जघन्यता एवं

1- यह शासनादेश इलेक्ट्रानिकली जारी किया गया है, अत: इस पर हस्ताक्षर की आवश्यकता नही है ।

2- इस शासनादेश की प्रमाणिकता वेब साइट http://shasanadesh.up.nic.in से सत्यापित की जा सकती है ।

http://shasanadesh.up.nic.in

जनपदीय अधिकारियों द्वारा समयपूर्व रिहाई का किये गये विरोध के दृष्टिगत यू0पी0 प्रिजनर्स रिलीज आन प्रोबेशन एक्ट, 1938 की धारा-2 के अन्तर्गत सिद्धदोष बन्दी राजेन्द्र सिंह पुत्र श्री पुत्तू सिंह, निवासी जनपद-हरदोई को फार्म-ए/लाईसेंस के आधार पर रिहा किये जाने की संस्तुति नहीं की गयी है।

3- उपर्युक्त वर्णित तथ्यों के परिप्रेक्ष्य में मुझे यह सूचित करने का निदेश हुआ है कि बन्दी राजेन्द्र सिंह (बन्दी संख्या-15058) पुत्र श्री पुत्तू सिंह, निवासी जनपद-हरदोई के फार्म-ए पर यू0पी0 प्रिजनर्स रिलीज आन प्रोबेशन एक्ट, 1938 की धारा-2 के प्राविधानों के अन्तर्गत सम्यक् विचारोपरान्त उसे मुक्ति का पात्र नहीं पाया गया है। अतएव उक्त बन्दी की लाइसेन्स पर मुक्ति शासन द्वारा अस्वीकार कर दी गयी है। तदनुसार उसके फार्म-ए पर शासन के आदेश अंकित करके एतद्द्वारा वापस लौटाया जा रहा है। कृपया प्राप्ति स्वीकार करते हुए शासन के निर्णय से बन्दी को तत्काल अवगत कराने का कष्ट करें।

संलग्नक: यथोपरि।

(बन्दी का फार्म-ए एवं समस्त पत्रादि सहित)

भवदीय,

(सूर्य प्रकाश सिंह सेंगर)
संयुक्त सचिव।

संख्या-737/2017/1269(1)/22-2-2017 तद्दिनांक

प्रतिलिपि निम्नलिखित को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषित:-

1- जिला मजिस्ट्रेट, हरदोई।
2- वरिष्ठ अधीक्षक, आदर्श कारागार, लखनऊ।
3- निजी सचिव, मा0 राज्यमंत्री, कारागार विभाग को मा0 मंत्री जी के सूचनार्थ।
4- गार्ड फाईल।

आज्ञा से,

(सूर्य प्रकाश सिंह सेंगर)
संयुक्त सचिव।

1- यह शासनादेश इलेक्ट्रानिकली जारी किया गया है, अत: इस पर हस्ताक्षर की आवश्यकता नही है ।
2- इस शासनादेश की प्रमाणिकता वेब साइट http://shasanadesh.up.nic.in से सत्यापित की जा सकती है ।

शासनादेश सख्या-737/2017/1269/22-2-2017-17(483)/2017

दिनांक 30 अगस्त, 2017 का संलग्नक

सरकार के आदेश

आदर्श कारागार, लखनऊ में निरूद्ध राजेन्द्र सिंह (बन्दी संख्या-15058) पुत्र श्री पुत्तू सिंह, ग्राम-रमपुरा प्रतिपालपुर, थाना-हरपालपुर, जनपद-हरदोई का निवासी है। बन्दी ने जगतपाल की 3-4 बिस्वा जमीन पर कब्जा कर लिया और पंचायत का फैसला नहीं मान रहा था। घटना से 4-5 दिन पूर्व भी राजेन्द्र की जगतपाल से कहासुनी हुयी थी। इसी बात को लेकर दिनांक 29.12.2000 को लगभग 04.30 बजे जगतपाल के भाई सुमनपाल सिंह पर डण्डा वा खुरपी से हमला कर हत्या की। उक्त अपराध हेतु बन्दी को सत्र परीक्षण संख्या-310/2001 के अन्तर्गत भा0द0वि0 की धारा-302 के अन्तर्गत मा0 अपर सत्र न्यायाधीश, हरदोई के आदेश दिनांक 11.05.2004 द्वारा आजीवन कारावास के दण्ड से दण्डित किया गया, जिसे मा0 उच्च न्यायालय के आदेश दिनांक 23.11.2006 द्वारा यथावत रखा गया। बन्दी द्वारा दिनांक 25.02.2017 तक 15 वर्ष 08 माह 25 दिन की अपरिहार तथा 19 वर्ष 07 माह 18 दिन की सपरिहार सजा भोगी गयी है। बन्दी का जेल आचरण अच्छा एवं सुधारात्मक है। जिला प्रोबेशन अधिकारी, पुलिस अधीक्षक, जिला मजिस्ट्रेट द्वारा बन्दी की समयपूर्व मुक्ति की संस्तुति नहीं की गयी है। प्रोबेशन बोर्ड द्वारा अपने अभिमत में अंकित किया है कि बन्दी ने जगतपाल से जमीन पर कब्जे को लेकर हुए विवाद में दिनांक 29.12.2000 को जगतपाल के भाई सुमनपाल सिंह पर डण्डा वा खुरपी से हमला कर हत्या करने का जघन्य अपराध कारित किया है। इस प्रकार बन्दी द्वारा जघन्य अपराध कारित किया है। इस तरह के अपराधियों की समयपूर्व रिहाई से समाज में न्यायिक प्रणाली के बारे में विपरीत सन्देश जायेगा। बन्दी का अपराध व्यक्ति विशेष तक सीमित अपराध की श्रेणी में होने, भविष्य में अपराध करने का अवसर होने, अशक्त न होने, जेल में और आगे निरूद्ध रखने का सार्थक प्रयोजन होने, पारिवारिक सामाजिक व आर्थिक दशा समयपूर्व रिहाई हेतु उपयुक्त न होने की पुष्टि पुलिस अधीक्षक, जिला प्रोबेशन अधिकारी एवं जिला मजिस्ट्रेट द्वारा 05 बिन्दुओं की आख्या में की है। इस प्रकार बन्दी द्वारा किये गये अपराध की गंभीरता, जघन्यता एवं जनपदीय अधिकारियों द्वारा समयपूर्व रिहाई का किये गये विरोध के दृष्टिगत यू0पी0 प्रिजनर्स रिलीज आन प्रोबेशन एक्ट, 1938 की धारा-2 के अन्तर्गत सिद्धदोष बन्दी राजेन्द्र सिंह पुत्र श्री पुत्तू सिंह, निवासी जनपद-हरदोई को फार्म-ए/लाईसेंस के आधार पर रिहा किये जाने की संस्तुति नहीं की गयी है। उक्त के दृष्टिगत सम्यक् विचारोपरान्त शासन द्वारा बन्दी की फार्म-ए के आधार पर समयपूर्व रिहाई **अस्वीकार** किये जाने का निर्णय लिया गया है।

(सूर्य प्रकाश सिंह सेंगर)
संयुक्त सचिव।

1- यह शासनादेश इलेक्ट्रानिकली जारी किया गया है, अतः इस पर हस्ताक्षर की आवश्यकता नही है ।

2- इस शासनादेश की प्रमाणिकता वेब साइट http://shasanadesh.up.nic.in से सत्यापित की जा सकती है ।

http://shasanadesh.up.nic.in